18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति

परिचय

विश्व की क्रांति श्रृंखला मे इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति अति अद्भुत, अनोखी एवं विशिष्ट सिद्ध हुई। इस क्रांति की विशिष्टता इसी तथ्य में निहित है कि इस अद्भुत क्रांति ने विश्व की आर्थिक प्रगति को चरम परिणिति दी,साथ ही विश्व के राजनीतिक, समाजिक एवं बौद्धिक पक्षों को भी एक साथ अति लाभान्वित किया। मानव सभ्यता के विकास मे विश्व को मध्य युग से आधुनिक युग में रूपांतरण वस्तुतः औद्योगिक क्रांति का ही प्रतिफल है।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में घटित औद्योगिक क्रांति, मानव के पूर्व विकसित शिल्प ज्ञान का चरम रूप यद्यपि औद्योगिक क्रांति जैसा कि संबोधन से स्पष्ट होता है, मूलतः उद्योग कारखानों के जन्म एवं तकनीकी प्रगति से ही संबंधित थी। किंतु इस क्रांति ने आर्थिक जगत के दो अन्य आधारों कृषि एवं व्यापार को भी विकास को चरम परिणिति प्रदान की। इस क्रांति के फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था मे भी तीव्र गति से परिवर्तन हुआ और जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। इस प्रकार 18 वीं सदी में जो परिवर्तन हुए, उसे औद्योगिक क्रांति ,(Industrial Revolution)कहां गया है। ***एडवर्ड*** ने औद्योगिक क्रांति की परिभाषा निम्न शब्दों में दी है, "औद्योगिक प्रणाली तथा श्रमिकों के स्तर में होने वाले परिवर्तन को ही औद्योगिक क्रांति की संज्ञा दी जाती है।" "The Great changes in the technique of the industry and status of workmen is really called the Industrial Revolution" *प्रोफेसर* ***डैविस*** के अनुसार 'औद्योगिक क्रांति का अभिप्राय उन परिवर्तनों से है जिन्होंने यह संभव कर दिया की मनुष्य उत्पादन की प्राचीन तरीकों को छोड़कर बड़ी मात्रा में बड़े-बड़े कारखानों में वस्तुओं का उत्पादन सकें।" इतिहासकार टी oडब्ल्यू oराइकर के शब्दों में, "मानव के हाथों के श्रम के स्थान पर ऊर्जा-चलित मशीनों द्वारा उत्पादन और समस्त देश में यातायात के साधनों का प्रचलन ही वह रूपांतरण है जिसे औद्योगिक क्रांति कहते हैं'। "The Industrial Revolution was the transformation in the methods of production and transportation through the general substitution of power driver machinery for hand labour.

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के कारण'

औद्योगिक क्रांति का जन्म इंग्लैंड में हुआ, उसके बाद उसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ा। हालांकि 18वीं सदी में क्रांति से पूर्व फ्रांस यूरोप का अति समृद्ध तथा महान राष्ट्र था फिर भी इस शांतिपूर्ण क्रांति का उदय इंग्लैंड में ही हुआ। यह क्रांति इंग्लैंड में ही क्यों प्रारंभ हुई ? इस प्रश्न का उत्तर निम्नलिखित कारणों में निहित है:-

1 प्राकृतिक कारण

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के उद्भव में प्राकृतिक तत्व ने बहुत सहयोग किया। इंग्लैंड की भौगोलिक स्थिति और जलवायु औद्योगिक विकास के अनुकूल थी।

(क)***जल शक्ति***:- समुद्र से घिरा होने के कारण इंग्लैंड पूरी तरह से सुरक्षित देश था। बाहरी आक्रमणों का डर नहीं था। किसी भी देश का आर्थिक विकास बाहरी सुरक्षा में ही निहित है। इसके अलावा इंग्लैंड की जल शक्ति ने वहां की नाविक शक्ति को भी सुधीर किया। जिसके बल पर ब्रिटेन ने विशाल उपनिवेश साम्राज्य की स्थापना की। उसका यही साम्राज्य ब्रिटेन के उत्पादित वस्तुओं का बाजार बना।

(ख) ***आद्र जलवायु:-***

ब्रिटेन में वस्त्र व्यवसाय के लिए तीव्र विकास में वहां की आद्र (damp) ,जलवायु वरदान सिद्ध हुई।

(ग) ***पदार्थों की खनिज प्रमुखता:***

इंग्लैंड में लोहा और कोयला प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। कोयला और लोहा की प्राप्ति के लिए तरह तरह के उपाय किए गए। फलस्वरूप लोहा और कोयला का प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना वहां की आर्थिक प्रगति का आधार बना।

(2) आर्थिक कारण

निम्नांकित आर्थिक तत्व, इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के जन्म के लिए उत्तरदाई थे:

(क) ***यांत्रिक उत्थान***: 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड में लकड़ी के अकाल से कोयले के प्रयोग पर जोर दिया जाने लगा। परिणाम स्वरूप कोयले की खानों का भी विकास हुआ। खानों में एकत्रित पानी को निकालने के लिए वाष्प चलित यंत्रों का विकास हुआ। कोयले की खान के नजदीक लोहा मिलने से,लोहे के उद्योग को विकसित किया गया। शेफील्ड में पहला इस्पात कारखाने की नींव डाली गई। इस तरह यांत्रिक विकास ही औद्योगिक प्रगति का आधार स्तंभ बना।

(ख) ***आर्थिक क्षेत्र में सुधार***

18 वीं सदी में कृषि में अनुपम सुधार हुए जिससे उत्पादन क्षमता में तरक्की हुई। टाउनसेंड के रोटेशनल सिस्टम के द्वारा, वर्ष में कभी भी खेत परती ना रहने की व्यवस्था की। प्रत्येक वर्ष अलग अलग फसल रोपने की व्यवस्था की गई।बोर्ड ऑफ एग्रीकल्चर बनाया गया। जिसके द्वारा चकबंदी करके उत्पादन बढ़ाया गया।सरकार की ओर से अधिक से अधिक अनुबरक भूमि को उर्वरा बनाया गया। नई-नई प्रकार की खाद की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त रॉबर्ट बैकवेल की भेड़ की नस्ल सुधारने के प्रयास एवं उद्देश्य से स्थापित स्मिथ-फील्ड क्लब ने भी उत्पादन क्षमता में वृद्धि की। कृषि एवं पशुपालन के सुधारों ने हरित क्रांति पैदा कर दी, जो उद्योग धंधों के विकास का भी आधार एवं प्रेरणा स्रोत बना।

(ग) ***बैंक प्रणाली का विकास***

इंगलैंड की बैंकिंग प्रणाली औद्योगिक विकास की आधारशिला बनी। इस क्षेत्र में इंग्लैंड फ्रांस से आगे था। बैंकिंग प्रणाली के कारण व्यापारियों उद्योगपतियों एवं व्यवसायियों को पर्याप्त पूंजी कर्ज़ से मिल जाती थी।

(घ) ***पूंजी की अधिकता***

18 वीं सदी में व्यापार में अति वृद्धि होने के कारण,इंग्लैंकड की व्यापारिक कंपनियों के पास अतिरिक्त धन एकत्रित हो चुका था। इसी धन से नए नए कारखाने खोले गये। नाविक शक्ति की सुदृढ़ता के कारण, व्यापारियों को पर्याप्त सुविधा एवं लाभ का विश्वास भी था। इसी विश्वास से बिना भय के अतिरिक्त पूंजी को उद्योगों में लगाया गया ताकि उत्पादित वस्तुएं नविदेशों में बिक सके।

3 प्रशासनिक एवं राजनीतिक कारण:-

18 वीं सदी मे इंग्लैंड का राजनीतिक वातावरण सुरक्षित एवं शांतिपूर्ण था। 17 वी सदी में राजा एवं संसद के मध्य चल रहा संवैधानिक संघर्ष,1688 की गौरवपूर्ण क्रांति में विसर्जित हो चुका था। संसद की सर्वोच्चता स्वीकार कर लिया गया था। संसदीय प्रभुत्व ने इंग्लैंड में प्रशासनिक परिवर्तन के साथ आर्थिक नीति में परिवर्तन किया, जो औद्योगिक विकास का आधार बना। पहले उद्योग एवं व्यापार पर राजा के चापलूसी का ही एकाधिकार रहता था जिससे आर्थिक विकास सीमित हाथों में रहकर कुंठित हो गया था। किंतु संसदीय प्रशासन ने जनता से प्रत्यक्ष संबंध बनाकर जनसाधारण को भी उद्योग एवं व्यापार में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

एक तरफ वालपोल एवं छोटे पीट जैसे सुधारवादी प्रधानमंत्रियों ने उन्मुक्त व्यापार नीति(Free Trade Policy) का समर्थन कर, उद्योग एवं व्यापार के विकास में सहायता दी तो दूसरी ओर जॉर्ज तृतीय जैसे राजा ने कृषि के विकास के लिए बोर्ड ऑफ एग्रीकल्चर(Board of Agriculture) की स्थापना की। विंडसर में मॉडल फॉर्म भी बनाया गया। सरकार द्वारा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिलने से व्यवसायिक एवं व्यापारिक कंपनियों ने तन मन धन से औद्योगिक क्रांति को सफल बनाया।

4 सामाजिक कारण :-

किसी भी देश में उद्योगों का विकास तभी संभव है, जब सस्ते मजदूर उपलब्ध हो। यह वरदान भी इंग्लैंड को 18वी सदी में सुलभ हुआ। जिससे मिल-मालिकों को अधिक से अधिक कारखाने खोलने प्रेरणा दी। इंग्लैंड में सस्ते मजदूर के लिए कुछ प्रथाएं उत्तरदाई थी जैसे प्राचीन आई दास प्रथा (Serfdom)की समाप्ति से बंधुआ मजदूरों को नगर में आने की स्वतंत्रा मिली। 16 वी सदी में इंग्लैंड में प्रचलित घेराबंदी की प्रथा (Enclosure System) से मजदूरों- कृषिको में बेकारी उत्पन्न हुई । इसके अतिरिक्त 18 वीं सदी में यूरोप के अन्य राष्ट्रों की प्रवासी मजदूरों ने भी मजदूरों की संख्या में वृद्धि की। ब्रिटेन के व्यवसायिक नगरों में इन प्रवासी, बेकार एवं स्वतंत्र मजदूरों की भीड का परिणाम अंत में सस्ती मजदूरी में फलित हुआ और यह सस्ती मजदूरी कारखानों के विकास में सहायक सिद्ध हुए।

5 अंतर्राष्ट्रीय कारण

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के सम्मुख दो तत्व इंग्लैंड के औद्योगिक विकास को बहुत अधिक प्रभावित किया प्रथम उपनिवेशवाद एवम द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय युद्ध।

(क) ***उपनिवेशवाद*** :-

1714 ईस्वी की संधि (Treaty of Utrecht) के बाद,। ब्रिटेन विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य का स्वामी बन गया। उसके साम्राज्यवाद का आधार था, उपनिवेशवाद। उसके साम्राज्य में यूरोप, एशिया, अमेरिका एवं अफ्रीका आदि सम्मिलित थे। यह समस्त उपनिवेशी देश इंग्लैंड के लिए अच्छे स्रोत साबित हुए। खासकर भारत और अमेरिका में ब्रिटेन को कच्चे माल का नयाब भंडार मिला। भारत से करोड़ों की पूंजी ब्रिटेन पहुंची। वहां यह पूंजी एवम कच्चा माल नए नए उद्योगों में लगा। इंग्लैंड के कारखानों में निर्मित अधिक वस्तुओं की खपत का प्रश्न भी इन उपनिवेश ने हल कर दिया। उपनिवेशी देश इंग्लैंड के उत्तम बाजार सिद्ध हुए, जहां बहुत अधिक कीमत पर सामान बेचा जाता था यही मुनाफा औद्योगिक प्रगति का आधार बना।

(ख)***अंतरराष्ट्रीयक युद्ध***:-

लगभग संपूर्ण 18वीं सदी इंग्लैंड की इतिहास में युद्धों की सदी रही।स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध, सप्त वर्षीय युद्ध(1756-1763), अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम(1776-1785) एवं नेपोलियन के युद्ध (1795-1814)ने इंग्लैंड की आर्थिक नीति को नया मोड़ दिया।अधिक युद्धों के कारण वस्तुओं की मांगों में भी वृद्धि हुई। मांग की वृद्धि ने,अधिक उत्पादन की प्रेरणा दी। इंग्लैंड में औद्योगिक परिवर्तनों की मूल में इन युद्धों से उत्पन्न वस्तुओं की मांग कहा गहरा हाथ था।

इसके अतिरिक्त इंग्लैंड के हाथों, फ्रांस की पराजय ने इंग्लैंड को समुद्री व्यापार का सर्वे सर्वा बना दिया,और फ्रांस के उपनिवेशों पर भी अधिकार हो जाने से इंग्लैंड को दुगना कच्चा माल मिलने लगा। जिससे उत्पादन क्षमता में तीव्र गति आई। निर्मित वस्तुओं की खपत के लिए सुलभ नए बाजारों ने भी इंग्लैंड का जोश बढ़ाया और और व्यापारिक औद्योगिक विकास दिन दोगुना बढ़ता रहा।

(ग) ***फ्रांस की क्रांति का इंग्लैंड पर प्रभाव***

फ्रांस में घटित क्रांति(1789)के दौरान, फ्रांस का विदेशों से व्यापार लगभग समाप्त हो गया था। अंतरराष्ट्रीय जगत में एक प्रतिद्वंदी के हटने का इंग्लैंड ने तुरंत लाभ उठाया। फ्रांस के उपनिवेशों की मांगों को इंग्लैंड ने पूरा किया।क प्रोफेसर नोलेस ने सही कहा है "क्रांति के द्वारा उत्पन्न आर्थिक अव्यवस्था से फ्रांस का विकास चालीस वर्ष पिछड़ गया। इसलिए 1830 ईसवी में फ्रांस पुनः अपनी साधारण स्थिति पर पहुंचा, तब तक इंग्लैंड विश्व का कारखाना बन चुका था।"

औद्योगिक क्रांति के महत्व या परिणाम

औद्योगिक क्रांति के फल स्वरुप उत्पादन के तरीकों में जो महान प्रवर्तन हुआ उसके चलते यूरोपीय समाज में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। वस्तुतः उसने मानव जीवन में एक उल्लेखनीय परिवर्तन ला दिया।

(1) ***आर्थिक परिणाम***

बड़े पैमाने पर चीजों का निर्यात होने लगा और बने वस्तुओं को बेचकर पूंजीपति वर्ग अधिक से अधिक धन कमाने लगा फलस्वरूप देश में धन धान्य की बाढ़ सी आ गयी, खासकर इंग्लैंड अब अत्यधिक धनी देश बन गया।

(2) ***शहरों का विकास***

जहां-जहां कारखाने खुले वहां वहां नए नए शहरों का अभ्युदय हुआ। मजदूर लोगों के निवास को स्वास्थ्यकर बनाने के लिए म्युनिसपलटियों की स्थापना हुई कथा अब यह शहर राजनीतिक क्रियाकलापों के केंद्र बनने लगे।

(3) ***यातायात के साधनों का विकास***

कल कारखानों के खुलने से तथा माल को इधर-उधर ले जाने तथा कच्चे मालो को कारखाने तक पहुंचाने के लिए यातायात के साधनों का विकास किया गया। रेल तथा तार का विकास ने जीवन को सुगम बना दिया।

(4) ***पूंजीपति वर्ग का जन्म***

कारखानों के खूलने वाणिज्य व्यवसाय में अधिक से अधिक लाभ कमाने के कारण समाज में नए पूंजीपति वर्ग का जन्म हुआ। इस वर्ग के पास ज्यादा धन जमा हो गया। पूंजीपतियों ने कृषि क्षेत्र में अपनी पूंजी लगाई और बड़े जमींदार बन गए ।

(5) ***साम्यवादी विचारधारा का उदय***

कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की स्थिति दिन-प्रतिदिन बदतर होने लगी फलस्वरूप उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए साम्यवादी विचारधारा का उदय हुआ मजदूर इस विचारधारा से प्रभावित होकर संगठित होने लगे और उन्होंने मजदूर संघों का निर्माण प्रारंभ किया।

(6) ***घरेलू उद्योगों का विनाश***

औद्योगिक क्रांति का बुरा प्रभाव घरेलू उद्योग धंधे पर पड़ा तथा उनका विनाश होने लगा। जब नए नए कारखाने खुलने लगे और इसमें बड़ी मात्रा में तथा सस्ता माल बनने लगा तब छोटे-छोटे घरेलू उद्योग धंधे उसका मुकाबला नहीं कर सके।

(7) ***साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का विकास***

कल कारखानों के लिए कच्चे मालों और बने हुए वस्तु के लिए बाजार प्राप्ति के लिए यूरोपीय देशों ने उपनिवेशन की स्थापना करनी आरंभ कर दी।अनेकों अफ्रीकी एवं एशिया के देशों को गुलाम बना लिया गया। उपनिवेशो की स्थापना की प्रतियोगिता ने अंतर्राष्ट्रीय वातावरण को अशांत कर दिया तथा युद्ध की आग में झोक दिया।

(8) ***समाजिक प्रभाव***

औद्योगिक क्रांति ने समाज को मुख्यतः दो भागों में बांट दिया :-एक पूंजीवादी और दूसरा मजदूर । दोनों के हित परस्पर विरोधी थे इसलिए दोनों में तकरार उत्पन्न हुआ। एक तरफ पूंजीवाद था तो दूसरी तरफ समाजवाद। पूंजीवादी व्यवस्था के जीवित रहते हुए, समाजवाद की स्थापना की कल्पना नहीं की जा सकती थी। ***कार्ल मार्क्स*** का विचार था की पूंजीवादी व्यवस्था को श्रमिक शक्ति के द्वारा नष्ट की जा सकती है। इस प्रकार की विचारधारा ने श्रमिकों को पूंजीवाद का विरोध करने के लिए प्रेरित किया।

निष्कर्ष

इस प्रकार एक संघर्ष प्रारंभ हो गया और यह स्पष्ट कर दिया कि कोई भी राज्य किसी अन्य राज्य पर बहुत दिनों तक राज़ नहीं कर सकता। एक वर्ग दूसरे वर्ग को हमेशा शोषण नहीं कर सकता। संघर्ष के परिणाम स्वरूप दुनिया के अनेक देशों में समाजवादी या साम्यवादी संघर्ष की स्थापना हो सकी।

Course co ordinator Dr Anwarul Haque Ansari